International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-2629, (Print), E-ISSN-2320-5466, ISSUE-11, VOL-I, Nov,2013

शोध पत्र – हिन्दी

नरेन्द्रसिंह तोमर का व्यक्तित्व

* सुरेश सरोठिया ** संगीता राणा

*-** भाषा अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय. , इन्दौर

व्यक्तित्व :–

आज मैने अपने द्वितीय पुत्र चि. राजेन्द्र की सद्प्रेरणा से अचानक निश्चिय किया कि जीवन के अंतिम पड़ाव पर अपनी जीवन–यात्रा के संस्मरण लिपि बद्ध कर आने वाली पीढ़ियों को एक ऐसा ऐतिहासिक उपहार दे सकूँ जिसमें बीते युग की उन्हें मनोहर झाँकी के दर्शन हो सके। आगे आने वाला युग जिस तेजी से गतिमान हो रहा है उसकी तो मैने अपने देश अपने गाँव के साथ–साथ संयोग से विदेश यात्रा करने के बाद महसूस किया कि समय चक्र किस तेजी से बदल रहा है?

शुभ समय देख ग्राम वासियों को एकत्र कर गोद देने की प्रथा अनुसार श्री ठा. खलकसिंह जी ने ढोल ढमाके के साथ तीन महिने के बालक श्री कु. बलभद्रसिंह जी को स्व. श्री रतनसिंह जी की पत्नि सौ. तुलसी बाई की गोद में रख दिया, उस समय पिवड़ाय गाँव के परम विद्वान पं. परमानन्द जी त्रिवेदी ने श्री ठा. रतनसिंह जी की ओर से एक वसीयतनामा लिखकर ग्राम के कई प्रमुख ग्रामवासियों ने हस्ताक्षर किये तथा बच्चे का नाम बदलकर उस समय की प्रथा अनुसार नया नाम कु. कन्हैयालाल (मेरे पिता) रखा गया। जो आज तक प्रचलित समाज में सब उन्हें कन्हैयासिंह और गाँव में कन्हैयालाल के नाम से पुकारते थे, जो आज तक प्रचलित है।

गोदी का कार्यक्रम पूर्ण होने के बाद ग्राम के लोगो ने बताया था कि ठा. रतनसिंह जी की पत्नि ने जैसे ही बालक को गोद में किया तो सौ. तुलसी बाई के आँचल से दूध की धारा फूट पड़ी थी। उसी से बालक को माता का दूध पीने को मिला। श्री ठा. रतनसिंह जी ने श्री कन्हैयालाल जी की पूरी परवरिश की खूब लाड़ प्यार से उन्हें पाला और बड़ा किया तथा इन्दौर के पास भौरासला गाँव के निवासी श्री लालसिंह जी भदोरिया की बहन सौ. का. श्री कावेरी बाई से बड़ी धूम धाम से शादी कर दी। श्री कन्हैयालाल जी की पहली और दूसरी संतान जन्म के कुछ दिन बाद ही नहीं रहीं। उनकी तीसरी संतान मैंने जन्म दिनांक 4 मार्च 1923 में लिया। दादी बताती थी कि मैं बहुत ही दुबला और कमजोर था।

हम दोनों भाई खूब ऊधम मचाते रहते थे, फिर भी सबके लाड़ले थे। पिताजी से मामाजी ने कहा कि इसे मैं अपने पास रखकर इन्दौर में पढ़ाऊँगा, और दूसरे दिन ही मामा सायकल पर बिठाकर इन्दौर ले आये। सातवीं पास कर 8वीं कक्षा में मिड़िल स्कूल में भर्ती हुवा।

बाल किशन दादा के साथ कभी आर्य समाज मल्हारगंज जाता वहाँ यज्ञ हवन होने के बाद विद्वानों के भाषण होते तो आग्रह करके बाल कृष्ण दादा ने मुझसे कहा कि तोमर तू भी अपना भजन गा दें। मैंने वहाँ पहली बार इतने लोगों के सामने गाया था। जिंदगी देश की सेवा में लगा दूँ भगवान– सब लोगों ने बड़ी तरीफ की और जब भी आर्य समाज जाता मुझे गीत भजन सुनाना ही पड़ता, मेरा गला अच्छा था। सारे देश में राष्ट्रीय आन्दोलन प्रारंभ हो चुके थे, भगतसिंह को फांसी अंग्रेजो ने दी तो देश में एक भूचाल सा आ गया। रोज प्रभात फेरियाँ निकलती थी, मैं भी प्रभात फेरी में उन दिनों छपे राष्ट्रीय गीत गाता तो सब दोहराते थे।

श्री बालकृष्ण त्रिवेदी जिन्हें मैं दादा कहता था, उनके प्रोत्साहन से मैं माणिक चौक आज का सुभाष चौक में राष्ट्रीय सभाएँ होती, मैं बालकृष्ण दादा के साथ वहाँ जाता। चुपचाप मंच के पास बालकृष्ण दादा जाकर सभा के संचालक को कह देते कि तोमर भी राष्ट्रीय कविता सुनायेगा।

मैं कविता या कोई राष्ट्र गीत सुनाता तो लोगों को बहुत अच्छा लगता इस तरह मैं बिलकुल बिना झिझक के तब गीत सुनाता तो सब लोग तारीफ करते। मुझे भी अच्छा लगता। कुछ दिनों के बाद फिल्मी धुनों पर, खासकर प्रदीप जी के गीतों की धुनों पर राष्ट्रीय गीत लिखने लगा और उन्हें पहले तो दासाहब और उनकी मंडली को सुनाता

वे सब मुझे प्रोत्साहन देते और मीटिंगों में जन सभाओं में जब गीत सुनाने लगा तो मैं प्रसिद्ध हो गया। सभा प्रारंभ होने के पहले और भाषणों के बाद भी गीत सुनाता।

श्री एम.एल. सोजतिया प्रभात किरण जी ने मुझे राष्ट्रीय गीत लिखने को खूब प्रोत्साहित किया। फिल्मी धुनों पर राष्ट्रीय गीत इतने प्रसिद्ध हो रहे थे कि लोग बड़े उत्साह से उन्हें बार–बार सुनाने का आग्रह करते थे। जितने भी राष्ट्र गीत लिखे वे सब श्री सोजतिया ने नई दुनियाँ प्रेस से ही जयहिंद गीतावली, आजाद हिंद गीतावली, गाँधी गीतावली, बड़े चलो और लड़े चलों छपाकर सारे देश में जगह जगह भेजे। अंडमान निकोबार से छूटकर श्री सावरकर जी पहली बार इन्दौर आये थे, मैंने उनकी जीवनी पढ़कर उनके लिये एक स्वागत गीत लिखा। वहाँ गीत समाप्त होने के बाद श्री सावरकर जी ने मुझे हृदय से लगा लिया। इन्दौर की सारी उपस्थित जनता ने मुझे खूब सराहा– जहाँ भी कवि सम्मेलन होते मुझे अवश्य बुलाते और मेरे गीत सुनकर इन्दौर की जनता ने मुझे बहुत मान दिया, और पूरा राष्ट्रीयता के रंग में रंग गया। कोई राष्ट्रीय नेता की सभा होती तो मुझे अवश्य बुलाकर राष्ट्रीय गीतों को सुनवाकर ही सभा प्रारंभ होती थी।

नीमा परिवारों में मालवी बोली का प्रचलन होने से बहने आग्रह करती कि खड़ी बोली में तुम राष्ट्रगीत लिखते हो तो मालवी में भी हमें राष्ट्र गीत लिखो। तब मैंने शादी के समय गाये जाने वाले गीतों की धुन पर कई गीत मालवी में लिखे, जिन्हें बहने समूह में गाती रही, वे गीत उन दिनों बहुत प्रसिद्ध हुए।

सारा देश अंग्रेजो के आधीन तो था पर देश में 365 राजाओं की हुकूमत भी चल रही थी, उन दिनों देश को अंग्रेजो के चंगुल से आजाद कराने का आंदोलन कांग्रेस द्वारा चलाया जा रहा था, तो राजाओं के चंगुल से छुड़ाने का आंदोलन जनता द्वारा प्रजामंडल की स्थापना करके आन्दोलन शुरू हो चुका था।

हर वर्ष प्रजामंडल का अधिवेशन तयशुदा स्थान पर होता था, जिसमें राजनैतिक प्रस्तावों पर चर्चा होती थी और आन्दोलन की रूपरेखा तैयार कर शहर, कस्बों और गाँवों तक आजादी के आन्दोलन को व्यवस्थित चलाने की कार्यकर्ताओं द्वारा गाँव– गाँव में अधिवेशन में पास हुए प्रस्ताओं की जानकारी दी जाती थी। योजनानुसार महितपुर में प्रजामंडल का अधिवेशन आयोजित किया गया, जिसके राज्य अध्यक्ष वीर काका परुलेकर अध्यक्ष थे। अधिवेशन जिस दिन प्रारंभ होना या उसके एक दिन पहले राज्य शासन के अधिकारी ने अधिवेशन पर पाबन्दी लगा दी लेकिन नेतओं ने इसका घोर विरोध किया तथा अधिवेशन वाले दिन सबने सत्याग्रह का निश्चय कर शासन के आदेश को नहीं मानकर अधिवेशन के मंच से भाषण देने का कार्यक्रम बनाया।

कार्यकर्ता टोलियों में मंच पर भाषण देने जाते तो आय.जी. तुंगारे द्वारा रोकने पर भी जब भाषण देना शुरू करते तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाता और उन्हें गिरफ्तार कर के महितपुर जेल भेज देते थे। मैं भी पहली बार वहाँ गिरफ्तार हुआ तथा महितपुर जेल भेज दिया। वहाँ श्री भँवरलाल जी भट्ट जो अच्छे कवि थे तथा और भी कई साथी वहाँ थे, जेल में भी हम लोग खूब गीत गाते थे। वहीं भट्ट जी और मैंने ''मजा आयेगा जेल के जीवन में'' गीत लिखा, जो बड़ा प्रसिद्ध हुआ। हम लोगों की गिरफ्तारी की खबर जब घर वालों को लगी तो पिताजी और घर वालों को बड़ी फिक्र हुई वे महितपुर आये और जेल में मुझसे मुलाकात की। हम लोगों को बड़े आनन्द में देखा तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और वे खुश होकर घर आये। एक महीना जेल में रहे। बाद में शासन द्वारा हमें छोड़ दिया गया।

मैंने युवावस्था से ही लोक–गीतों की धुन पर गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ने, आजादी को गले लगाने, साक्षरता, एकता, भाईचारा और भेदभाव के निकलकर नया सवेरा जगाने का अस्नान किया था। आजादी की प्राप्ति के बाद भी मैंने जन जागरण के गीतों के साथ ही नये भारत को लोगों को नये आव्हान से जोड़ने का काव्य–कर्म किया। आजादी मिलते ही जैसा कि हमारे राष्ट्रनायकों का सपना था कि जनता साक्षर होगी, नयी प्रगति आयेगी, साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ेगा, गाँधी जी का सपना पूरा होगा और गाँव का किसान शहर का मजदूर तथा आम आदमी सुख चैन की जिंदगी बसर कर सकेगा और आजाद भारत सच्चे रामराज्य को देख सकेगा? किन्तु ये सपना जब अधूरा दिखने लगा बल्कि पूरी तरह धूमिल होने लगा तो मैंने लोक काव्य से छुट्टी ले ली और मैंने हाथ में एक तारा ले लिया और उदेराम भीला जी जैसे समर्थ आदिवासी लोक गायकों की गम्मत में बैठने लगा उनसे निर्गुणी तथा मीरा माता की मीरा कुटी रतलाम से सगुण मालवी लोकगीतों

के शहद का आस्वाद लेने लगा। इन गीतों ने मेरे कंठ को लोक गायकी में बड़ी जगह दी, मैं मालवा और देश के अन्य भागों में इन गीतों की मस्ती छानने लग गया! भाई श्री बालकवि बैरागी, पं. श्री सूर्यनारायण जी व्यास, डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन, श्रद्धेय श्री डॉ. रामकुमार जी वर्मा जैसे श्रेष्ठ कला साधकों ने मुझे प्रोत्साहन दिया, संयोग से विदेश लंदन के बी.बी.सी. से मालवी लोकगीतों को सर्वप्रथम मुझे प्रसारित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भाई श्री बालकवि जब मंत्री थे उन्होंने रतलाम में मालवी मेले का आयोजन किया सर्व प्रथम मुझे मालवी में गणेश वंदना प्रस्तुत करना थी, मैं सोच रहा था कि श्री पटेल साहब अगर गणेश वंदना में मेरा साथ दे दें तो गीत के प्रस्तुतिकरण में और भी भराव आ जावेगा। मैंने तुरंत श्री पटेल साहब से निवेदन कर कहा कि क्या आप मेरे साथ गणेश वंदना गाने में सहयोग देने की कृपा करेंगे तो झटसे श्री पटेल ने अपनी स्वीकृति दे दी, बिना रिहर्सल के ही मेंरे पास माइक के पास आकर खड़े हो गये। मैंने वंदना शुरू की तो दूसरी लाइन के साथ ही श्री पटेल ने साथ में गाना शुरू कर दिया। उस दिन गणेश वंदना में ऐसा समा बँधा जैसे बरसों से हम साथ–साथ गा रहे हों उस दिन से आज तक उनके साथ ही हूँ।

श्री पटेल चाहते रहे कि मैंने देश की गुलामी का दौर देखा, गुलामी की बेड़ियों को तोड़ते लोगों का जुझारू जोश देखा, जुझारू पन में मैं भी शरीक हुआ और जबकि राम राज्य का सपना कोसों दूर रह गया है, श्री पटेल चाहते रहे कि अब इस विषैले वातावरण का जमकर विरोध कर काव्य रचूँ और उन्हीं लोक धुनों पर रचूँ जो मैंने जवानी में रचे और गाये थे। श्री पटेल की प्रेरणा और चि. राजेन्द्र का आग्रह कितना मौजूँ था कि बीमारी से उभरकर प्रौढ़ अवस्था में भी फिर से मेंरी कलम जवान हो गई।

मैंने यह संकल्प कर लिया है कि ''किस्मत जागी भाग खुलीग्या लगी किनारे नाव हो एक दन कइँ थो अब कइँ हुइग्यो म्हारो प्यारो गाँव हो'' की तरह ऐसे गीत रचूँ जिनमें ध्वस्त होते सपने, निर्मूल होती संस्कृति और निष्काशित होती हमारी परम्परा के चित्र होंगे। मैं देख रहा हूँ कि समय कितना बदल गया है, अब इंसान इंसान नहीं रहा, प्रकृति, प्रकृति नहीं रही और इसका मुख्य कारण है राजनैतिक स्वार्थ भ्रमपूर्ण नितियाँ तथा समाज के हित से बेखबर राजनेताओं की नीयत। आज के बदलाव के दौर की कहानी मेंरे जैसे राष्ट्रवादी के सपनों के ध्वस्त होने की कहानी है, गाँवों की बरबादी की कहानी है। इस कहानी को कहते हुए मुझे बेहद दर्द है और यह आशा भी है कि ये झंझावात जरुर दूर होगा, और हमारा आम जन सुख और शान्ति से जीवन बसर कर सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. कुँ. नरेन्द्रसिंह तोमर : मेरी जीवन गाथा : हस्तलिखित लिपि प्राप्त, दि. 29/12/2010
2. कुँ. नरेन्द्रसिंह तोमर : 23 मई, 'हार्टनश्शाही के अत्याचारों की 'एक दर्द भरी कहानी', प्रका.उमरावलाल चौधरी, इन्दौर, 23 मई, 1947
3. कुँ. नरेन्द्रसिंह तोमर : बढ़े चलो, प्रका. एम.एम. सोजतिया एण्ड कंपनी पब्लिशर्स एण्ड बुक सेलर्स इन्दौर, अप्रैल–1946
4. कुँ. नरेन्द्रसिंह तोमर : पगडंडी, सम्पा. नरहरि पटेल, द्वितीय संस्करण–2010